Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सन्त रविदास

लेखक : दिनेश चन्द्र चतुर्वेदी
dcchaturvedico@rediffmail.com

प्रकाशन तिथि - माघीपूर्णिमा, सम्वत् २०६३
सन्त रविदास जयन्ती

प्रकाशक :
प्रियम् बुक डिपो
आर-6, वाणी विहार, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-58 मूल्य-5-00

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तृतीय संस्करण : सम्वत् २०६३

© लेखक : दिनेश चन्द्र चतुर्वेदी

प्रकाशक :

PRIYAM BOOK DEPOT

R-6, Vani Vihar, Uttam Nagar, New Delhi-58

Sales Counter :-

Sadar Bazar, Delhi and Gurgaon

मुद्रक : फुलसुआ प्रिन्टर्स, फोन : 011-25944794, 9868627397

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ

सन्त रविदास

सन्त रविदास का जन्म संवत् १४३३ की माघ मास की पूर्णिमा को हुआ । इनका जन्म स्थान काशी के निकट का ग्राम मांडुर है । जन्म के दिन रविवार था, इसीलिए इनका नाम रविदास रखा गया । पिता का नाम राघव तथा माता का नाम करमा था ।

पुस्तकालय
ग्रंथ सं०
तिथि

सन्त रविदास ने लिखा है–

जाके कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत

फिरहि अजहु बनारसी आस पासा ।।

स्वामी रामानन्द के शिष्य बने

बचपन से ही सन्त रविदास ने अपने पिता के साथ चमड़े के जूते बनाने का काम सीखा और इस व्यवसाय में उनकी सहायता करने लगे ।

नौ वर्ष की छोटी आयु में ही इन पर प्रभु की भक्ति का रंग चढ़ने लगा था । इनकी आध्यात्मिक रुचि देखकर माता–पिता कुछ चिन्तित हुए । सांसारिक कामों में इन्हें उलझाने से आध्यात्मिक रुचि में कमी आएगी, ऐसा सोच कर माता–पिता ने इनका छोटी आयु में ही विवाह कर दिया । विधि का विधान देखो विवाह हो जाने पर भी इनकी धार्मिक रुचि में कोई कमी नहीं आई। वे सन्तों, महात्माओं की संगति करने लगे । उनके साथ धर्म–चर्चा करने तथा प्रभु भक्ति के भजन गाने में इन्हें बड़ा आनन्द आता।

उन दिनों काशी में पंचगंगा घाट पर स्वामी रामानन्द नाम के प्रसिद्ध सन्त रहते थे । सन्त कबीर जैसे अनेक सन्त, महात्मा तथा गृहस्थ इनके शिष्य बन गए थे । सन्त रविदास भी इनकी ओर आकृष्ट हुए । उनके चरणों में नतमस्तक हुए और ज्ञान एवं भक्ति की पूर्णता का लाभ लेने की इच्छा हुई।

दो–एक दिन का सत्संग करने पर ही सन्त रविदास के मन में इन महान सन्त के शिष्य बनने की इच्छा जागी । इन्होंने कहा कि वे चमार जाति के हैं । स्वामी रामानन्द ने कहा कि सन्त जाति का विचार नहीं करते और ऐसा मानते हैं कि प्रभु की भक्ति करने का हर मनुष्य को अधिकार है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भक्त रविदास को स्वामी रामानन्द से दीक्षा लेकर बड़ा आनन्द हुआ । श्रेष्ठ सन्त तथा योगी अपने पिछले जन्म का हालचाल जान सकते हैं । सन्त रविदास ने लिखा है कि पिछले जन्म में भी वे स्वामी रामानन्द के शिष्य थे । निश्चय ही पिछले जन्म में गुरु शिष्य दोनों के नाम वे नहीं थे जो इस जन्म में उन्हें दिए गए । उनकी साधना उस जन्म में पूर्ण नहीं हो सकी । इसीलिए उन्हें यह जन्म और लेना पड़ा । पिछले जन्म की साधना एवं संस्कार के कारण ही बचपन से ही उनमें धार्मिक रुचि उत्पन्न हो गई ।

स्वामी रामानन्द ने भगवान श्रीराम का भजन करने का आदेश अपने शिष्य को दिया । गुरु का आदेश पाकर भक्त रविदास ने श्रीराम को अपना आराध्य–देव बनाया और अपने श्रेष्ठ गुरु के मार्गदर्शन में साधना करने लगे । वे श्रीराम की भक्ति से पूर्ण पद भजन बनाते थे और उन्हें सुन्दर ढंग से गाते थे । इन पदों के गाते समय सन्त रविदास तन्मय हो जाते थे । जो भी सन्त रविदास के भजन सुनता, अपने आप को धन्य मानता । उनके भजनों को सुन कर लोग अपने भीतर भक्तिरस संचार अनुभव करने लगते थे ।

पिता ने घर से निकाला

पिता ने सन्त रविदास का विवाह छोटी आयु में कर दिया था । सन्त रविदास की धार्मिक रुचि जैसी विवाह के पहले थी, वैसी ही विवाह के बाद भी बनी रही । उसमें कोई कमी नहीं आई । वे जूते बनाते समय भी भगवान श्रीराम की भक्ति में मस्त होकर भजन गाते रहते । साधुओं से कम दाम लेकर भी जूते बना देते थे । अनेक बार तो वे ऐसे धार्मिक पुरुषों को बिना मूल्य लिये ही जूते देते थे । गोस्वामी तुलसीबाबा ने कहा है –

सन्त हृदय नवनीत समाना । कहा कबिन्ह परि कहै न जाना ।
निज परिताप द्रवहिं नवनीता । पर दुख द्रवहिं सन्त सुपुनीता ।।

यह सब सन्त रविदास के पिता के लिए असहनीय था । उन्होंने कई बार सन्त रविदास को समझाया कि परिवार के लिए धन कमाना आवश्यक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है । इसलिए किसी साधु, महात्मा को कम दामों में या बिना दाम के ही जूते न बना दिया करें । परन्तु, इसका सन्त रविदास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा ।

सांसारिक पिता ने भक्त रविदास को उनकी पत्नी सहित घर से निकाल दिया । परिवार की चल और अचल सम्पत्ति में से कोई भाग उन्हें नहीं दिया । घर के पिछवाड़े थोडी भूमि रहने और अपना काम–धन्धा करने को दे दी । सन्त रविदास तो सन्तोषी स्वभाव के थे । वे पत्नी के साथ वहाँ रहने लगे । उन्होंने कोई विरोध प्रकट नहीं किया । प्रसन्नतापूर्वक वह अपना व्यवसाय तथा हरिभजन और सन्तों का सत्संग करते रहे ।

सन्त रविदास ने गुरू स्वामी रामानन्द के चरणों में बैठ कर तथा सन्तों महात्माओं का सत्संग कर उच्चकोटि का आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लिया । वेद, शास्त्र, पुराण आदि की सब मुख्य बातें उन्हें ज्ञात थीं । उनका यह ज्ञान कोरा पुस्तकीय नहीं था । अपने गुरू के मार्गदर्शन में उन्होंने योग साधना की थी तथा ईश्वर का साक्षात्कार किया था । वेदों तथा शास्त्र में बताये गए नैतिक तथा आध्यात्मिक आदर्शों को उन्होंने जीवन में उतारा था । इसीलिए उनका व्यक्तित्व बड़ा मधुर, प्रेरक तथा प्रभावशाली था । शीघ्र ही लोग उन्हें एक श्रेष्ठ सन्त मानने लगे ।

सन्त रविदास के गुरू भाई सन्त कबीर थे । उन्होंने रविदास को 'साधुओं में सन्त' कहा है । मीराबाई ने बड़े आदर से उनका नाम लिया है । उन्होंने सन्त रविदास को अपना गुरु धारण किया ।

अज्ञानी पंडित चुप हो गये

एक बार सन्त रविदास गंगा स्नान को जा रहे थे । अन्य अनेक लोग भी गंगास्नान को जा रहे थे । इनमें कुछ अहंकारी पंडित थे । उन्होने सन्त रविदास का उपहास करना आरम्भ कर दिया, "ये तो चमार हैं । ये क्या गंगास्नान करेंगे ।"

इस पर सन्त रविदास जी ने वेद–शास्त्रों का प्रमाण देकर उन पंडितों को समझाया–

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

''जाति एक जामें एकहि चिन्हा,
देह अवयव कोइ नहिं भिन्ना ।
कर्म-प्रधान ऋषि-मुनि गावें,
यथा कर्म फल तैसहि पावें ।
जीव कै जाति, वर्ण कुल नाहीं,
जाति भेद है जग मूरखाई ।
नीति स्मृति शास्त्रहिं गावें ।
जाति भेद शठ मूढ़ बतावें ।''

अर्थात् – जीव की न कोई जाति होती है न वर्ण न कुल । ऋषि-मुनियों ने कर्म को प्रधान बताया है । हमारे शास्त्र यही कहते हैं । जाति-भेद की बात मूढ़ और शठ करते हैं । वास्तव में सबकी जाति एक ही है ।

उनके मुख से शास्त्रों की विशुद्ध बात सुनकर अहंकारी और अज्ञानी पंडित चुप हो गए । सन्त रविदास के तर्क के आगे उन्हें नतमस्तक होना पड़ा ।

जन्म जनेऊ दिखाया

सन्त रविदास के सम्बन्ध में कई चमत्कारपूर्ण घटनाएँ हुई हैं । एक बार कुछ ब्राह्मणों ने इस आधार पर स्वयं को श्रेष्ठ बताया कि वे यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनते हैं जबकि रविदास नहीं पहनते हैं इस पर सन्त रविदास ने उनसे कहा–

''सूत्र जनेऊ द्विज कहलाओ,
जन्म जनेऊ हमें दिखाओ ।
जो नहिं जन्म जनेऊ होई,
सो मतिमंद न पंडित कोई ।''

अर्थात्–आप लोग धागे के जनेऊ पहन कर द्विज कहलाते हो । जन्म के कई बर्ष बाद इसको धारण करते हो । लेकिन जन्म से ही जो जनेऊ धारण किया जाता है, वह हमें दिखाओ, वही सच्चे द्विजत्व का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रतीक है क्यों कि वह जन्म जनेऊ ईश्वर धारण करवाता है, जबकि धागे का जनेऊ तुम स्वयं पहनते हो । अगर तुम्हारे पास जन्म जनेऊ नहीं है तो सच्चे अर्थों में द्विज या ब्राह्मण नहीं हो ।"

यह सुनकर ब्राह्मण चकराए । वे बोले "जन्म जनेऊ तो हमने कभी सुना ही नहीं । वह हमारे पास नहीं है । अगर तुम्हारे पास हो तो दिखाओ । तब हम तुम्हें द्विज मान लेंगे ।"

कहा जाता है कि तब भक्त रविदास जी ने कुल्हाड़ी से अपना बायाँ कन्धा चीर डाला । परन्तु वहाँ से रक्त नहीं निकला, दूध की धार निकली और स्वर्णिम तागों वाला जनेऊ प्रकट हो गया । तब सबने सन्त का जय–जयकार किया। जय रविदास। जय संत रविदास। जय श्रीराम ।

गंगा माता ने कंगन दिया - कठौती में गंगा

गंगा स्नान का पर्व था । देश के विभिन्न भागों से श्रद्धालु प्रयाग जा रहे थे जहाँ संगम पर उन्हें गंगा स्नान करना था । काशी से भी अनेक लोग प्रयाग जाने को तैयार हुए । जो स्वयं जाने में असमर्थ थे उन्होंने दूसरों के हाथों अपनी भेंट गंगा जी को अर्पण करने के लिए भेजी । काशी क्षेत्र के राजा–रानी ने भी इन तीर्थयात्रियों को अपनी बहुमूल्य भेंट गंगा माता को अर्पित करने के लिए दी ।

प्रयाग जाने वाले तीर्थयात्रियों ने सन्त रविदास से चलने के लिए कहा । परन्तु उन्होंने असमर्थता बताई । तब लोगों ने उनसे कहा कि अगर वे स्वयं नहीं जा सकते तो अपनी भेंट उनके द्वारा भिजवा सकते हैं । सन्त रविदास ने अपनी ओर से एक पाई (सबसे छोटा सिक्का) दी और कहा "मेरी यह भेंट गंगा माता को अर्पण कर देना । परन्तु गंगा माता को भेंट तभी देना जब वह हाथ में लें।" लोगों ने इस भेंट को बड़ा तुच्छ समझा और सन्त रविदास के व्यवहार पर आश्चर्य किया ।

प्रयाग पहुंच कर इन तीर्थयात्रियों ने गंगास्नान किया और अपनी–अपनी भेटें अर्पण कीं । फिर अन्य लोगों द्वारा भिजवाई गई भेंट

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गंगाजी में डाल दीं । राजा–रानी की मूल्यवान भेंट भी उनका नाम लेकर गंगाजी में डाल दी गई । अर्पित कर दी गयीं ।

लेकिन जब सन्त रविदास का नाभ लेकर उनकी पाई गंगा में डाली गई तब एक अद्‌भुत घटना घटी । गंगा जी में से एक हाथ बाहर निकला जिसमें सोने का एक सुन्दर कंगन था । साथ ही आवाज आई "यह कंगन मेरे भक्त रविदास को देना ।"

यह देखकर सब चकित हो गए । तीर्थ यात्री लौट कर काशी आए और राजा–रानी के पास गए । उन्हें सारा वृतान्त सुनाया तथा वह कंगन भी दिखाया । राजा–रानी भी दंग रह गए । वे समझ गए कि सन्त रविदास कोई महान सन्त हैं इसीलिए गंगा माता ने उनकी पाई स्वीकार कर ली तथा बहुमूल्य कंगन उनके लिए भेजा ।

उस कंगन को लेकर राजा–रानी सन्त रविदास जी के दर्शन करने पहुचे । इनके मन में श्रद्धा और विश्वास था । परन्तु साथ कुछ अविश्वासी और अहंकारी पंडित भी गये । वहाँ पहुंच कर राजा–रानी तो नतमस्तक हुए किन्तु अविश्वासी लोग बोले, "यह सब असम्भव है । सन्त रविदास की चालाकी है ।"

अन्य लोगों ने कहा – "नहीं, यह सत्य है । हमारे सामने गंगा माता ने हाथ बाहर निकाल कर सोने का यह कंगन दिया और कहा," यह कंगन मेरे भक्त रविदास को देना ।" इस पर अविश्वासी लोग चुनौती के स्वर में बोले, "अगर सन्त रविदास में इतनी शक्ति है तो गंगा–माता ऐसा ही दूसरा कंगन हम सबके सामने भेंट करें ।"

राजा–रानी, भक्त रविदास तथा सब लोग गंगा तट पर जाने के लिए तत्पर हुए, तभी वे लोग पुनः बोले, "वहाँ जाने की क्या जरूरत है ? भक्त रविदास में अगर शक्ति है और ये गंगा माता के भक्त हैं तो गंगा माता यहीं, इनके द्वार पर बहने लगें । तब हम विश्वास करेंगे ।"

यह सुनकर भक्त रविदास ध्यान में बैठ गये । उन्होंने गंगा माता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

से प्रार्थना की । थोड़ी ही देर में चमत्कार हुआ । तभी कठौती में से एक हाथ निकला जिसमें ठीक वैसा ही एक कंगन था ।

उस कंगन को लेकर पहले कंगन से मिलान किया गया तो दोनों को बिल्कुल एक जैसा पाया गया । सब लोग सन्त रविदास के चरणों में नतमस्तक हुए ।

मुस्लिम सदना पीर को रामदास बनाया

उन दिनों देश के बड़े भाग पर मुसलमानों का शासन था । उनका यह प्रयास रहता था कि अधिक से अधिक हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जाय । किसी को धमकी देकर, किसी को प्रलोभन देकर और किसी को बलपूर्वक मुसलमान बनाया जाता था ।

सदना पीर नाम का एक मुस्लिम विद्वान था । उसका ध्यान सन्त रविदास की ओर गया । उसने देखा कि बड़ी संख्या में हिन्दू उनको अपना गुरू मानते हैं । जैसा वे कहें वैसा ही करते हैं । अगर सन्त रविदास जी को मुसलमान बनाया जा सके तो उनके शिष्य अपने आप मुसलमान बन जायेंगे । फिर उसको मुस्लिम शासक से अच्छा पुरस्कार मिल सकेगा ।

ऐसा सोच कर सदना पीर सन्त रविदास से शास्त्रार्थ करने आया । उसने हिन्दू धर्म की निन्दा की तथा अपने इस्लाम धर्म की बड़ाई करने लगा ।

सन्त रविदास जी ने उसकी बातें शान्ति से सुनी । फिर इस्लाम के बारे में बताने लगे–

"खुदा कलाम कुरान बताओं
फिर क्यों जीव मार कर खाओ?
खुदा नाम बलिदान चढ़ाओ
सो अल्लाह करे दोष लगाओ ।
दिन भर रोज़ा नमाज गुजारें
संध्या समय पुनः मुर्गी मारें ।
भक्ति करें फिर खून बहावें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पामर किस विधि दोष मिटावें?
जिसमें जीव हिंसा लिखी, वह नहीं खुदाकलाम
दया करें सब जीव पर, सोई, अहले इस्लाम।"

फिर यह भी कहा–

"निराकार तुम खुदा बताओ
कुरान खुदा का कलाम ठहराओ।
कुरान कहै तो बनै साकारा
फिर कहाँ रहा खुदा निरंकारा?"

इन तर्कों के आगे सदना पीर कुछ बोल नहीं पाया । वह निरुत्तर हो गया । उसने इस्लाम को दोषपूर्ण माना और यह स्वीकार किया कि हिन्दु धर्म वास्तव में श्रेष्ठ है ।

सदना सन्त रविदास जी का शिष्य बना और उसने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया । सन्त रविदास जी ने उसका नाम रामदास रखा । इस प्रकार मुस्लिम सदना पीर, रामदास बन गया । आया था सन्त रविदास जी को मुसलमान बनाने, लेकिन स्वयं हिन्दू बन गया ।

वैदिक धर्म में अटूट निष्ठा

उन दिनों दिल्ली का सुल्तान सिकन्दर लोदी था । वह कट्टर मुसलमान था । फिर अनेक उपायों द्वारा हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का प्रयास करता रहता था ।

सिकन्दर लोदी ने सन्त रविदास के विषय में सुना तो उन्हें दिल्ली बुलवाया । सन्त रविदास जी दिल्ली गए । सिकन्दर लोदी ने उन्हें हिन्दू धर्म त्याग कर मुसलमान बन जाने की सलाह दी । उन्हें अनेक प्रलोभन दिए । परन्तु सन्त रविदास ने प्रलोभनों को ठुकराते हुए वैदिक धर्म में अपनी अटूट निष्ठा इस प्रकार व्यक्त की –

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"वेद धर्म है पूरन धर्मा, वेद अतिरिक्त और सब भर्मा ।
वेद धर्म की सच्ची रीता और सब धर्मा कपोल प्रतीता ।
वेदवाक्य उत्तम धरम निर्मल वाका ज्ञान ।
यह सच्चा मत छोड़ कर, मैं क्यों पढ़ूं कुरान ।
श्रुति शास्त्र स्मृति गाई प्राण जायँ पुनि धर्म न जाई ।
कुरान बहिश्त न चाहिए, न मुझको हूर हजार ।
वेद धर्म त्यागू नहीं, जो गल चलै कटार ।।
वेदधर्म है पूरण धर्मा, करि कल्याण मिटावै भर्मा ।
सत्य सनातन वेद हैं, ज्ञान धर्म मर्याद ।
जो ना जाने वेद को, वृथा करै बकवाद ।।"

सन्त रविदास जी के इन निर्भीक शब्दों में सिकन्दर लोदी को इस्लाम की निन्दा सुनाई पड़ी । वह चिढ़ गया अब उसने उन्हें धमकी दी कि कठोर दण्ड दिया जाएगा , यदि वे मुसलमान नहीं बन जायेंगे ।

इस पर सन्त रविदास जी ने उत्तर दिया–

"मैं नहिं दब्बू बाल गँवारा, गंग त्याग महूँ ताल किनारा ।
प्राण तजूँ पर धर्म न देऊँ, तुमसे शाह सत्य कह देऊँ ।
चोटी शिखा कबहुँ नहिं त्यागूँ, वस्त्र समान देह भल त्यागूँ ।
कंठ कृपाण का करौ प्रहारा, चाहैं डुबावो सिन्धु मंझारा ।"

सुल्तान क्रुद्ध हो गया । उसने सन्त रविदास जी को कारागार में डाल दिया । वहाँ श्रीकृष्ण ने उन्हें दर्शन दिए और ढाढ़स बंधाया कि अपने धर्म निष्ठ सेवक की वे रक्षा करेंगे ।

अगले दिन सुल्तान जब नमाज पढ़ने लगा तो सामने सन्त रविदास जी को खड़ा पाया । उसको आश्चर्य हुआ कि उन्हें तो कारागार में डाल दिया है फिर वे महल में कैसे दिखाई पड़ रहे हैं । उसने दाहिनी ओर देखा तो वहाँ भी सन्त रविदास को पाया । बायी ओर देखा तो वहाँ भी सन्त रविदास ।

यह चमत्कार देखकर सिकन्दर लोदी घबरा गया । उसने सन्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रविदास जी को कारागार से मुक्त कर दिया और उनसे क्षमा माँगी । उदार सन्त ने उसको क्षमा कर दिया ।

चित्तौड़ में चमत्कार

चित्तौड़ के राणा ने श्रीकृष्ण का एक मंदिर बनवाया । मंदिर के लिए भगवान की एक सुन्दर प्रतिमा बनवायी । अब सोचा कि मंदिर में भगवान की प्रतिष्ठा किसके हाथों कराई जाय । उन्हें इस पुण्य कार्य के लिए सन्त रविदास सबसे अधिक उपयुक्त प्रतीत हुए । राणा सुलझे विचारों के थे और सच्चे भक्त थे ।

अतः उन्होने सन्त रविदास को चित्तौड़ आने के लिए सादर निमंत्रण भेजा । सन्त रविदास जी ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया ।

निर्धारित दिन के कुछ दिन पहले सन्त रविदास चित्तौड़ पहुंच गए । राणा ने उनका हार्दिक स्वागत किया और अपने परिवार सहित उनके चरणों में नतमस्तक हुए । चित्तौड़ में सन्त रविदास के भजन सुनने बड़ी संख्या में भक्तगण एकत्र होने लगे ।

इधर कुछ संकीर्ण विचारों के लोग राणा के पास गए और उनसे कहा कि हमने सुना है कि सन्त रविदास चमार जाति के हैं । अतः उनके हाथों मंदिर में भगवान की प्रतिष्ठा कराना उचित नहीं है । परन्तु, राणा ने कहा, "सन्तों और महात्माओं की जाति का विचार करना अनुचित है, क्योंकि उनकी तो कोई जाति होती ही नहीं है । हम यह जानते है कि सन्त रविदास जी श्रेष्ठ सन्त और भगवान के सच्चे भक्त हैं । इस कार्य के लिए उनसे अधिक श्रेष्ठ व्यवित्त हमें कोई दिखाई नहीं पड़ता । इसलिए यह कार्य वे ही करेंगे ।"

इससे वे लोग अप्रसन्न हो गए । कार्य में विघ्न डालने के लिए उन्होंने भगवान की प्रतिमा को कहीं छिपा दिया । राणा को जब पता चला कि प्रतिमा खो गई है तब वे बड़े चिंतित हुए ।

तब वे क्षुद्र मनोवृति वाले लोग राणा के पास गए बोले, "आप कहते हैं कि सन्त रविदास श्रेष्ठ सन्त और भक्त हैं । अगर वे वास्तव में ऐसे हैं तो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भगवान की प्रतिमा को प्रकट कर दें । फिर हम लोग उनके हाथ प्रतिष्ठापना कराने का विरोध नहीं करेगे ।"

राणा जी ने सन्त रविदास से प्रार्थना की । सन्त जी के आग्रह पर मंदिर के पट बन्द कर दिए गए । फिर सन्त रविदास जी ने बड़े तन्मय होकर भजन गाया और भगवान से प्रार्थना की । थोड़ी देर बाद, उनके कहने पर पट खोले गए तो वहाँ श्रीकृष्ण की वही मूर्ति देख कर सब लोग दंग रह गए । सबने भगवान श्री कृष्ण की जय के साथ भक्त रविदास की भी जय बोली ।

जिधर देखो उधर सन्त रविदास

इसके बाद विधिवत्, प्रतिमा की प्रतिष्ठापना सन्त रविदास जी ने की । इसके बाद मंदिर परिसर में ही राणा जी ने ब्राह्मणों को भोजन कराने की व्यवस्था की । अनेक ब्राह्मण वहाँ आसनों पर बैठ गए । तभी उन्हें पता चला कि सन्त रविदास जी भी वहीं भोजन करेंगे । इन ब्राह्मणों में वे संकुचित मनोवृत्ति वाले भी कुछ लोग थे ।

वे तुरन्त उठ खड़े हुए और बोले, " हम लोग सन्त रविदास के साथ बैठ कर भोजन नहीं कर सकते । इससे हमारा धर्म नष्ट हो जाएगा ।"

राणाजी ने उन्हें समझाने का प्रयास किया, किन्तु सब व्यर्थ । अन्त में सन्त रविदास जी ने ही बिगड़ती बात सबहाली । वे बोले, "अगर मेरे साथ बैठ कर भोजन करने से आपको धर्म के नष्ट होने की आशंका है तो मैं यहाँ भोजन नहीं करूंगा । आप निश्चिंत होकर भोजन करें । मैं मंदिर के बाहर ही रहूँगा, जब तक आपका भोजन न हो जाय ।"

ऐसा कहकर सन्त रविदास मंदिर के बाहर चले गए । अज्ञानी ब्राह्मण भोजन करने बैठे । तभी वहाँ एक और चमत्कार हुआ । एक ब्राह्मण ने अपनी बाईं ओर देखा तो वहाँ किसी ब्राह्मण को नहीं सन्त रविदास को भोजन करते देखा । उसने घबरा कर दाहिनी ओर देखा तो वहां भी सन्त रविदास को बैठा पाया ।

ऐसा ही हर ब्राह्मण ने पाया । प्रत्येक ब्राह्मण ने अपने दायें–बायें सन्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रविदास को भोजन करते देखा । यह देख वे घबरा गए । कुछ ब्राह्मण उठ कर मंदिर के बाहर गए तो वहां सन्त रविदास को द्वार पर बैठा पाया । उन लोगों ने पूछा, "क्या आप अभी मंदिर के भीतर आए थे जहाँ भोजन हो रहा था ।'

इस पर रविदास ने उत्तर दिया, "नहीं मैं अन्दर नहीं आया । मैं तो यहाँ बैठ कर आप सबके जूते साफ कर रहा हूँ ।"

तब सबकी आंखों पर से अज्ञान का पर्दा हट गया । सब सन्त रविदास के चरणों में नतमस्तक हुए और अपने दुर्व्यवहार के लिए उनसे क्षमा मांगी ।

देव प्रतिमा की प्रतिष्ठापना के इस अवसर पर भक्तिमती मीराबाई भी उपस्थित थीं और उन्होनें भजन गाया था ।

दूर-दूर तक कीर्ति फैली

स्वामी रामानन्द के बारह प्रमुख शिष्य थे जिनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध सन्त कबीर और सन्त रविदास थे । एक श्रेष्ठ सन्त और रामभक्त के रूप में सन्त रविदास की कीर्ति दूर–दूर तक फैली । सन्त कबीर ने उन्हें आदर से 'साधुओं में सन्त' कहा । भक्तिमती मीराबाई ने उन्हें अपना गुरु बनाया था । चित्तौड़ की रानी ने उनसे दीक्षा ली और उनकी शिष्या बनने में स्वयं को धन्य माना ।

भक्त रविदास जी की कीर्ति हिन्दी भाषी क्षेत्र के बाहर भी फैली । पंजाब में जब गुरु ग्रंथसाहब की रचना के लिए सन्तों के भजन और पद एकत्र किए गए तब सन्त रविदास जी के चालीस पद चुने गए और उन्हें इस महान ग्रंथ में स्थान दिया गया । इस प्रकार, सन्त रविदास के भजन घरों और मंदिरों के साथ ही गुरुद्वारों में भी गाए जाने लगे ।

गोस्वामी तुलसीदास जी भेंट करने आये संत रविदास की भक्ति–गाथा श्रीरामचरित मानस रचयिता गोस्वामी तुलसीदास तक पहुँची । तुलसी बाबा लिखते हैं –

जे निज भगत नाथ तव अहहीं । जो सुख पावहिं जो गति लहहीं ।।
सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु ।
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु हमहिं कृपा करि देहु ।। १। १५०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बाबा तुलसी, बाबा भक्त शिरोमणि संत रविदास के पास अपने प्रमुख शिष्यों को लेकर पहुँचे । पास के गांव में ठहरे थे, जहाँ उनके द्वारा रामकथा का प्रवचन चल रहा थ । प्रातः के प्रवचन के बाद एक शिष्य को साथ लेकर नाम–गाँव पूछते सन्त रविदास के घर तक पहुँचे ।

आज सन्त रविदास के पास जूते बनाने को बना बनाया चमड़ा नहीं था । एक मरे हुए बैल से वह स्वयं चमड़ा उतार रहे थे कि सन्त तुलसीदास का पदार्पण हुआ । परम रामभक्त सन्त रविदास, गोस्वामी तुलसीदास को एक परम रामभक्त जानकर चमड़ा छोड़ स्वागत करने दौड़े और उनका आलिंगन करने को प्रस्तुत हुए । पर तुलसीदास जी इस समय अपने को ब्राह्मण और सन्त रविदास को चमार मात्र मान बैठ थे और अनायास ही उनके पैर पीछे हो गये । क्षणभरको भौचक्के सन्त रविदास भी वहीं रूक गये । गोस्वामी तुलसीदास जी की मुखमुद्रा को देख सन्त रविदास ने दण्डवत किया, आसन की ओर इशारा किया, बैठाया । कुछ देर भक्ति की चर्चा और भजनानन्द प्राप्त कर सन्त तुलसीदास लौट आये । रविदास जी के हाथ से एक दो रक्त की बूदें तुलसीदास जी के कपड़े पर गिरी थी । अपने प्रमुख शिष्य को उन्होनें वह धोने को दी । सायंकालीन प्रवचन सभा में बोलते–२ गोस्वामी जी एक स्थान पर प्रसंग बदलने को हुए तो तुरन्त ही जिस शिष्य ने उनके कपड़े धोये, उसने हाथ जोड़ संकेत से बाबा तुलसीदास को प्रसंग बदलने को मना किया । संभवतः वह जान गया था कि बाबा तुलसीदास प्रसंग के मध्य सन्त रविदास की जाति मीमांसा करने वाले हैं, जोकि अनुचित व अनावश्यक होता ।

प्रवचन पूर्ण होने पर बाबा तुलसीदास ने अपने उस शिष्य को बुलाकर पूछा– "तुमने प्रवचन के मध्य मुझे क्यों रोकने का प्रयास किया?" शिष्य बोला – "गुरूजी ! संभवतः आप महापुरुष सन्तशिरोमणि रविदास जी की जाति मींमासा का संदर्भ देना चाहते थे" ।

बाबा तुलसीदास आज आश्चर्यचकित थे । बोले–"बालक ! तुमने मेरा मन कैसे जाना? यह ज्ञान कहाँ से हुआ तुम्हें?" शिष्य तत्क्षण बोला,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"गुरुजी! जब दोपहर ये आपके वस्त्र धोये तो एक–दो धब्बे जो संभवतः रक्त के थे मुझसे धुले नहीं । जब साफ करने के लिए मैंने उस धब्बे को मैंने चूस लिया तबसे मुझे अपनी प्रज्ञा (बुद्धि) मे परिवर्तन लग रहा है । अब बाबा तुलसीदास सबकुछ समझ चुके थे ।

किसी को साथ लिये बिना बाबा तुलसीदास भाग चले थे । तुरन्त पहुंचे सन्त रविदास की कुटिया पे । बाबा तुलसीदास सन्त रविदास के प्रति आदर और प्रेम के भाव से आलिंगन करने को प्रस्तुत थे । सन्त रविदास और बाबा तुलसीदास, दोनों भक्त–श्रेष्ठ एक दूसरे का प्रेमालिंगन कर रहे थे । मानो उनके राम उनको मिल गये । अखण्ड आनन्द। जय प्रभु राम

आइये हम सब सन्त चरणों में प्रार्थना करें –

सन्त सरल चित जगत हित जनि सुभाउ सनेहु ।
बाल बिनय सुनि कर कृपा रामचरन रति देहु ।।

सम्वत् १५२७ में सन्त रविदास ज्योति में ज्योति समा गए ।

❀ ❀ ❀

सन्त रविदास भजनमाला

(१)

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ ।
गावनहार को निकट बताऊँ ।।टेक।।
जबलग है या तनको आसा, तबलग करै पुकारा ।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तनकी, तब को गावनहारा ।।१।।
जबलग नदी न समुद्र समावै, तबलग बढै हँकारा ।
जब मन मिल्यो राम–सावरसों, तब यह मिटी पुकारा ।।२।।
जबलग भगति मुकतिकी आसा, परम तत्त्व सुनि गावै ।
जहँ जहँ आस धरत है यह मन, तहँतहँ कछू न पावै ।।३।।
छाड़ै आस निरास परमपद, तब सुख सति कर होई ।
कह रैदास जासों और करत है, परम तत्त्व अब सोई ।।४।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(२)

जब रामनाम कहि गावैगा, तब भेद अभेद समावैगा ।। टेक।।
जे सुख हैं या रसके परसे, सो सुखका कहि गावैगा ।। १।।
गुरू परसाद भई अनुभौ मति, बिस अमरित सम धावैगा ।। २।।
कह रैदास मेटि आपा–पर, तब वा ठौरहि पावैगा ।। ३।।

(३)

रामा है जगजीवन मोरा ।
तूँ न बिसारि राम मैं जन तोरा ।।टेक।।
संकट सोच पोच दिनराती ।
करम कठिन मोरि जाति कुजाती ।। १।।
हरहु बिपति भावै करहु सो भाव ।
चरण न छाड़ौ जाव सो जाव ।।२।।
कह रैदास कछु देहु अलंबन ।
बेगि मिलौ जनि करो बिलंबन ।।३।।

(४)

राम मैं पूजा काह चढ़ाऊँ ।
फल अरु फूल अनूप न पाऊँ ।।टेक।।
थन तर दूध जो बछरू जुठारी ।
पुहुप भँवर जल मीन बिगारी ।।१।।
मलयागिर बेधियो भुअंगा ।
विष अमृत दोउ एकै संगा ।।२।।
मन ही पूजा मन ही धूप ।
मन ही सेऊँ सहज सरूप ।।३।।
पूजा अरचा न जानूँ तेरी ।
कह रैदास कवन गति मोरी ।।४।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(५)

जो तुम तोरौ राम मैं नाहिं तोरौं । तुमसे तोरि कवनसे जोरौं ।।टेक।।
तीरथ बरत न करौं अंदेसा । तुम्हरे चरन कमल को भरोसा ।।१।।
जहँ तहँ जाओं तुम्हरी पूजा । तुमसा देव और नहिं दूजा ।।२।।
मैं अपनो मन हरिसों जोरयों । हरिसों जोरि सबन सों तोरयों ।।३।।
सबही पहर तुम्हारी आसा । मन क्रम बचन कहै रैदासा ।।४।।

(६)

आज दिवस लेऊँ बलिहारा । मेरे घर आया रामका प्यारा ।।टेक।।
आँगन बँगला भवन भयो पावन । हरिजन बैठे हरिजस गावन ।।१।।
करूँ दंडवत चरन पखारू । तन–मन–धन उन ऊपरि वारूँ ।।२।।
कथा कहैं अरु अरथ बिचारैं । आप तरैं औरन को तारैं ।।३।।
कह रैदास मिलैं निज दासा । जनम जनमकै काटैं पासा ।।४।।

(७)

अब कैसे छूटै नाम रट लागी ।। टेक।।
प्रभुजी, तुम चन्दन हम पानी ।
जाकी अँग अँग बास समानी ।।१।।
प्रभुजी, तुम घन बन, हम मोरा ।
जैसे चितवत चंद चकोरा ।।२।।
प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती ।
जाकी जोति बरै दिन राती ।।३।।
प्रभुजी, तुम मोती, हम धागा ।
जैसे सोनहि मिलत सुहागा ।।४।।
प्रभुजी, तुम स्वामी, हम दासा ।
ऐसी भगति करै रैदासा ।।५।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

With

Best Compliments
from

GRACE

MFG. & TRADING COMPANY

DISTRIBUTORS *Johason & Johnson*

MEDICAL BECTON & DICKINSON MEDICAL

Deepak Kapoor

308, ORIENTAL HOUSE, GULMOHAR COMPLEX,
YUSUF SARAI, NEW DELHI-49
Tel. : 011-51647190, 011-30901811
Fax : 011-26961831
Mobile : 9810040879
E-mail : gmtcmail@yahoo.com

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

With

Best Compliments

from

PRIYAM BOOK DEPOT

Stockist : Publication Division, NCERT, CBT, C.B.S.E., Sahitya Academy, All Granth Academies, D.B.T.B. And all other leading publishers of India.

देववाणी परिषद् द्वारा प्रकाशित तथा अन्यान्य हिन्दी/संस्कृत पाठ्य पुस्तकों के थोक विक्रेता

Sales Counter :-
Sadar Bazar, Delhi and Gurgaon

R-6, Vani Vihar, Uttam Nagar,
New Delhi-58
Phone : 25639146

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

With
Best Compliments
from

RANI TRADING CORPORATION

Suppliers of All Types of
Novalties, Gift Items and
Stationery.

104, MAITRY APARTMENTS
PLOT No. 28, I.P. EXTN.
DELHI-110092
Phone : 9899242910

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ

।। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ।।

(निस्वार्थ-भाव से एक दूसरे को उन्नत करते हुए परमकल्याण को प्राप्त करो)

छात्रबंधु

ए 1/बी 6, द्वितीयतल, नजदीक मदर डेयरी बूथ
लोकल शॉपिग सेन्टर, पंखा रोड़, जनकपुरी,
नई दिल्ली-58

-: छात्रों के उन्नयन का प्रेरणा पोषक केन्द्र :-

वन्दे मातरम् छात्रवृत्ति हेतु

छात्रबंधु कार्यालय पर सम्पर्क करें

पोस्टकार्ड पर अपना विवरण लिख भेजें

प्रविष्ट्री की अन्तिम तिथि : 15-04-2007

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection